बी.एच.डी.एफ-101

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2018 और जनवरी 2019 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ.–101
हिंदी में आधार पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच..डी.एफ.–101/2018–19

प्रिय छात्र/छात्राओ,

जैसा कि हमने 'कार्यक्रम दर्शिका' में बताया है कि हिंदी के आधार पाठ्यक्रम बी.एच.डी.एफ.–101 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 से 4 पर आधरित हैं।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा के विभिन्न कौशलों का विकास करना है। यह कौशल है : सुनकर समझना, पढ़ना, बोलना और लिखना। इसके लिए भाषा के आधारभूत तत्वों पर अधिकार प्राप्त करना होता है। भाषा सीखने का उद्देश्य यह भी है कि हम उसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, विविध विषयों को पढ़कर उन्हें समझ सकें और अपने शब्दों में उन्हें व्यक्त कर सकें तथा साहित्य पढ़कर उसका रसास्वादन ले सकें।

सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको हिन्दी भाषा के व्यावहारिक उपयोग में कितनी दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य का संबंध खंड 1 से 4 तक है। इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य भाषा के आधारभूत तत्वों पर आपकी लेखन क्षमता जाँचना है। कुछ प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त रूप में देने हैं।
2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। एक प्रश्न दिये गये अवतरणों के भाव पक्ष की व्याख्या पर आधारित है। एक अन्य प्रश्न में आपको निबंध लिखना है। सत्रीय कार्य में व्याकरण संबंधी कई तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। एक प्रश्न पत्र–लेखन लिखने के बारे में है। एक प्रश्न-भाव पल्लवन या संक्षेपण के बारे में हैं। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप हिन्दी भाषा के अपने प्रयोग में भी सुधार ला सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2 **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। संदर्भ और व्याख्या वाले प्रश्न में यह अवश्य जाँच लें कि संदर्भ में कही बातें दिये गये अंश के अनुरूप हैं। व्याख्या में भी क्रमबद्धता, तार्किकता और स्पष्टता होनी चाहिए। व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले अपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पायेंगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3 **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ–101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.एफ–101/टीएमए/2018–19
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10
   (क) लोहे के चने चबाना
   (ख) कान खड़े होना
   (ग) नमक मिर्च लगाना
   (घ) मुँहतोड़ जवाब देना
   (ङ) हवाई किले बनाना

2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए : 5
   (क) महा + ऋषि
   (ख) सु + आगत
   (ग) सत् + भावना
   (घ) मनः + अनुकूल
   (ङ) उप + आयुक्त

3. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो समानार्थी शब्द बताइए : 5
   (क) आकाश
   (ख) माँ
   (ग) गंगा
   (घ) स्त्री
   (ङ) चंद्रमा

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए : 5
   (क) तेज
   (ख) अहिंसा
   (ग) ज्ञानी
   (घ) विजय
   (ङ) अनुकूल

5. निम्नलिखित शब्दों के संधिविच्छेद कीजिए : 5
   (क) विद्यालय
   (ख) महेश
   (ग) पावक
   (घ) निर्धन
   (ङ) परमात्मा

6 निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए : 5
   (क) विज्ञान
   (ख) सुशिक्षित
   (ग) निडर
   (घ) अवशेष
   (ङ) प्रतिबिंब

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाइए : 5
   (क) पहाड़
   (ख) सुख
   (ग) शहर

(घ) आवश्यक
(ङ) आदर

8 निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250–300 शब्दों में लिखिए : 5X2=10

(क) 'वैष्णव की फिसलन' निबंध की अंतर्वस्तु का विश्लेषण अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) सूरदास के भाव पक्ष की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए : 5X2=10

क) कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ–कृपाल–कृपा तें संत–सुभाव गहौंगे।। 1।।
जथालाभ संतोष सदा काहू सों कुछ न चहौंगो
परहित–निरत निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगो।।2!!
पुरुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो
विगतमान सम सीतल मन, परगुन, नहिं दोष कहौंगो।।3।।
परिहरि देह जनित चिंता, दुख–सुख समबुद्धि सहौंगो
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरि भक्ति लहौंगो।।4।।

ख) मैं क्षितिज–भृकुटि पर घिर धूमिल
चिंता का भार बनी अविरल
रज–कण पर जल–कण हो बरसी,
नवजीवन–अंकुर बन निकली!
पथ को न मलिन करता आना,
पद चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन हो अंत खिली!
विस्तृत नभ का कोई कोना;
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

(क) 2018 में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन
(ख) स्वच्छता अभियान
(ग) संचार क्रांति

11. बाढ़ के कारण हुई जान-मान की क्षति पर 300 शब्दों में संपादकीय लिखिए। 10

12. अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिए जिसमें उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया हो कि आप उच्च शिक्षा के लिए किसी बड़े संस्थान में जाना चाहते हैं। 10

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2X5=10

हमारी शासन प्रणाली लोकतांत्रिक है। लोकतंत्र का सर्वोत्तम अर्थ होता है नागरिकों की समानता, या दूसरे शब्दों में असमानता का अंत। संसार में लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना से पूर्व अधिकतर समाज असमान राजनीतिक अधिकारों पर आधारित थे। केवल भारतीय समाज में ही राजनीतिक असमानता नहीं थी। यूरोप में अठारहवीं से बीसवीं शताब्दी तक धीरे-धीरे लोकतंत्र की स्थापना हुई। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे संविधान ने लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की। लोकतंत्र एक उत्तम आदर्श है। परन्तु इसे प्राप्त करना सरल कार्य नहीं है। हमारे जैसे समाज में, जहाँ अनेक विषमताएँ हैं, इस आदर्श की प्राप्ति और भी

कठिन है। इन विषमताओं से समाज में ऐसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जो राष्ट्रीय एकीकरण के मार्ग में बाधा प्रस्तुत करती हैं। ये सभी समस्याएँ अर्थात् जाति तथा वर्गों की असमानता, धार्मिक और भाषायी समुदायों में संघर्ष इत्यादि लोकतांत्रिक सरकार के संचालन को कठिन बना देते हैं। अतः इन्हें प्रायः भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ कहा जाता है। यदि भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ होना है तो हमें इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक मुकाबला करना होगा।

लोकतंत्र में दो महत्वपूर्ण विचार सामने आते हैं। ये हैं स्वतंत्रता तथा समानता के विचार। लोकतंत्र वह शासन प्रणाली है, जो कि लोगों को स्वतंत्रता प्रदान करती है। कुछ सीमाओं में रहते हुए वे जो चाहें कर सकते हैं। उनके पास ऐसे अधिकार होते हैं, जिन्हें सरकार भी छीन नहीं सकती। परन्तु ये सब भी समानता से संबंधित हैं। लोग स्वतंत्रता का वास्तविक उपयोग तभी कर सकते हैं जबकि वे समान हों। अतः स्वतंत्रता और समानता के विचार एक-दूसरे से संबद्ध हैं।

i) लोकतंत्र का अर्थ क्या है?
ii) यूरोप में लोकतंत्र की स्थापना कब हुई?
iii) लोकतंत्र के आदर्श की प्राप्ति किस कारण बाधित होती है?
iv) लोकतंत्र के महत्वपूर्ण विचार क्या-क्या हैं?
v) भारत में लोकतंत्र के समक्ष कौन-कौन सी चुनौतियाँ हैं?